P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-2) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

छविलाल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षा संकाय,
दयालबाग एजुकेशनल
इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा, भारत

रजनी सिंह
शोधकत्री,
शिक्षा संकाय,
दयालबाग एजुकेशनल
इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग, आगरा, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पूर्व माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के सन्दर्भ में नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसके अर्न्तगत शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन करने के लिए 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि प्रश्नपत्र का प्रयोग किया गया है, तथा नैतिक मूल्य मापन हेतु डॉ0 ए0 सेन गुप्ता एवं ए0के0 सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द : नैतिक मूल्य, शैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावना

शिक्षा व्यक्ति की जन्मजात शक्तियों का विकास करके उसे अपनी संस्कृति एवं सभ्यता को समझने, उसे सुरक्षित रखने व उसका विकास करने योग्य बनाती है। शिक्षा ही वह साधन है जो मनुष्य में गुणों का विकास कर उसके जीवन को स्वर्णमय बनाती है। मानव में मानवोचित गुणों का विकास करती है। मानव में मानवोचित मूल्यों का तथा चरित्र के निर्माण का श्रेय शिक्षा को ही जाता है। यह सर्वमान्य है कि अच्छी शिक्षा व्यवस्था ही प्रबुद्ध नागरिक पैदा करती है, लेकिन वर्तमान में यह नही कहा जा सकता है कि हमारी शिक्षा व्यवस्था श्रेष्ठ कोटि के नागरिक पैदा कर पा रही है अर्थात् नागरिकों का निर्माण कर पा रही है। यदि वर्तमान में कोई कमी दिखाई दे रही है तो वह है हमारी शिक्षा का मूल्यपरक न होना। वर्तमान में शिक्षा मानव के नैतिक मूल्यों का विकास नहीं कर पा रही है। शिक्षा आयोग (1964–66) हम इस बात पर जोर देना चाहते है, कि शिक्षा के सभी स्तरों पर विद्यार्थियों के मन में उचित मूल्यों को बैठाने की ओर ध्यान देना आवश्यक है। वास्तव में शिक्षा और नैतिक मूल्यों को अलग नहीं किया जा सकता है। नैतिक मूल्यों से रहित शिक्षा का कोई अर्थ नहीं है। नैतिक मूल्य बच्चे को अपने स्व के उदात्तीकरण की प्रेरणा देते हैं। उसके व्यवहार में जीवमात्र के प्रति दया, करूणा, ममता और प्रेमभाव विकसित होता है। इसलिये समस्त विद्यालयी क्रियाकलापों में यथोचित नैतिक मूल्यों के विकास को प्रेरित करने वाली परिस्थितियाँ पैदा करनी होंगी और विद्यालय के परिवेश को प्रेरणा का स्रोत बनाना होगा। तभी छात्रों में शिक्षा द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास सम्भव है। डंगवाल किरनलता (2000) ने कक्षा 5 के विद्यार्थियों में कुंठा प्रतिक्रिया तथा शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध का अध्ययन किया और पाया कि शैक्षिक उपलब्धि अहं प्रतिरक्षण के अतिरिक्त आक्रामक दशाओं, कुंठा प्रतिक्रियाओं से सहसम्बन्धित नहीं है। ए0एस0 बेनीपाल और जसपाल सिंह (2014) ''वयस्कों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन उनके कक्षा के वातावरण की अनुभूति के सम्बन्ध में'' और पाया कि वयस्कों की शैक्षिक उपलब्धि और कक्षा के वातावरण के बीच सकारात्मक सम्बन्ध है। निधि दरबारी (2014) ''उच्च संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन'' किया और पाया कि विभिन्न स्ट्रीम के विद्यार्थियों (महिला) के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। डॉ0 वी0 सुबुराव (2008) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों के सृजन का अध्ययन किया तथा उन्होंने विद्यार्थियों के व्यवहार में आये बदलाव का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया गया कि जिन विद्यार्थियों को नैतिक शिक्षा दी गयी उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन था जबकि जो विद्यार्थी इससे वंचित थे वे अपेक्षित व्यवहार नहीं दिखा पाये।

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के अनुरूप नैतिक मूल्यों का विद्यार्थियों अर्थात् विद्यार्थी समुदाय की उपलब्धि के सन्दर्भ में क्या स्तर है?

उपरोक्त प्रश्न का समाधान जानने हेतु शोधकत्री ने प्रस्तुत शोध अध्ययन का चयन किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में तुलना करना।
2. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों में तुलना करना।
3. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में तुलना करना।
4. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में तुलना करना।
5. निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में तुलना करना।

परिकल्पना

1. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का अनुसरण किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध केवल आगरा जनपद के सभी विद्यालय जो सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं तक ही सीमित रखा गया है।

प्रतिदर्श चयन

उक्त चयनित संस्थाओं के आठवीं कक्षा में अध्ययनरत 100 छात्र एवं 100 छात्राओं को प्रतिदर्श चयन की सोउद्देशीय विधि से प्रतिदर्श के रूप में चयनित किया।

शोध उपकरण

शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन करने के लिए 8वीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु स्वनिर्मित शैक्षिक उपलब्धि प्रश्नपत्र का प्रयोग किया गया है, तथा नैतिक मूल्य मापन हेतु डॉ0 ए0 सेन गुप्ता एवं ए0के0 सिंह द्वारा निर्मित नैतिक मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की प्रकृति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्त मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के हैं।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी परीक्षण

प्रदत्तों का विश्लेषण और व्याख्याः निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत प्रदत्तों का विश्लेषण और व्याख्या प्रस्तुत की गयी है–

1–उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या –1

प्रतिदर्श	N	M	S	D	σD	CR	सार्थकता स्तर
उच्च स्तर (विद्यार्थी)	50	26.65	4.68	1.76	0.99	1.78	असार्थक
निम्न स्तर (विद्यार्थी)	50	24.89	5.59				

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि परिगणित मान 1.78, सारणी मान .01 स्तर पर 2.58 तथा .05 स्तर पर 1.96 से कम है। अतः दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख–1

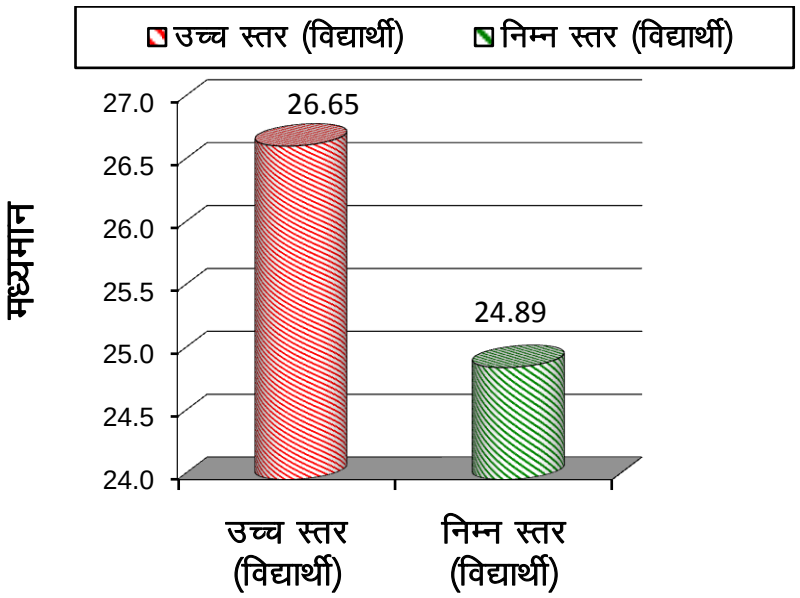

उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या –2

प्रतिदर्श	N	M	S	D	σ D	t	सार्थकता स्तर
उच्च स्तर (छात्राएं)	25	24.19	6.12	0.34	1.76	0.19	असार्थक
निम्न स्तर (छात्राएं)	25	23.85	6.57				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि परिगणित मान 0.19 सारणी मान से .01 और .05 दोनों स्तरों पर कम है, इसलिये दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख–2

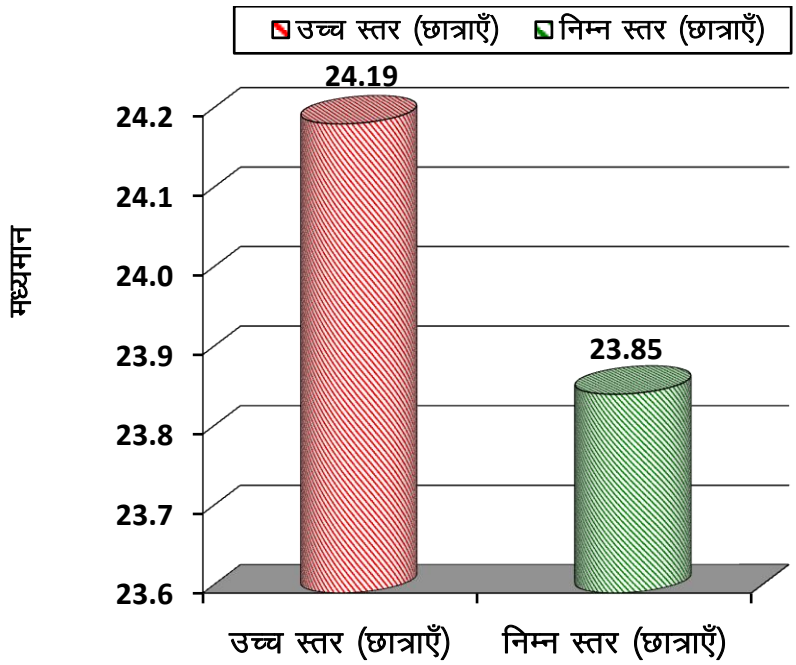

उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या –3

प्रतिदर्श	N	M	S	D	σD	t	सार्थकता स्तर
उच्च स्तर (छात्र)	25	28.15	3.06	2.30	1.00	2.30	.05 स्तर पर सार्थक
निम्न स्तर (छात्र)	25	25.85	4.07				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि परिगणित मान 2.30, सारणी मान .01 स्तर पर 2.66 से कम है इसलिये .01 स्तर पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है, परन्तु परिगणित मान 2.30 सारणी मान . 05 स्तर पर 2.00 से अधिक है। इसलिये .05 स्तर पर शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि .01 स्तर की दृष्टि से उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, परन्तु .05 स्तर की दृष्टि से उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

आरेख–3

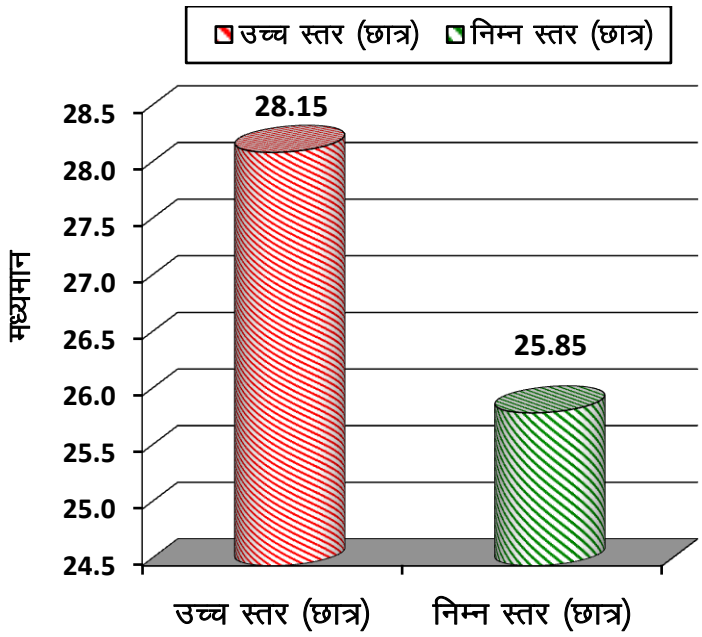

5 उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

तालिका संख्या –4

प्रतिदर्श	N	M	S	D	σD	t	सार्थकता स्तर
उच्च स्तर (छात्र)	25	28.15	3.06	3.96	1.34	2.96	सार्थक
उच्च स्तर (छात्राएं)	25	24.19	6.12				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि परिगणित मान t = 2.96, सारणी मान .01 स्तर पर 2.66 तथा .05 स्तर पर 2.00 से अधिक है। इस कारण दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना को निरस्त किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अन्तर है।

आरेख–4

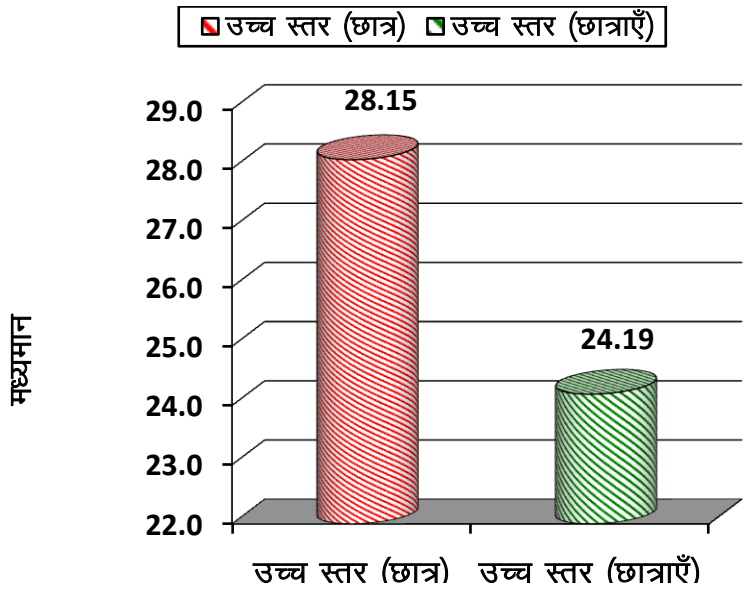

तालिका संख्या –5

प्रतिदर्श	N	M	S	D	σD	t	सार्थकता स्तर
निम्न स्तर (छात्र)	25	25.85	4.07	2.00	1.52	1.32	असार्थक
निम्न स्तर (छात्राएं)	25	23.85	6.57				

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि परिगणित मान t = 1.32, सारणी मान .01 स्तर पर 2.66 तथा .05 स्तर पर 2.00 से कम है। इसलिये दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र एवं छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

आरेख–5

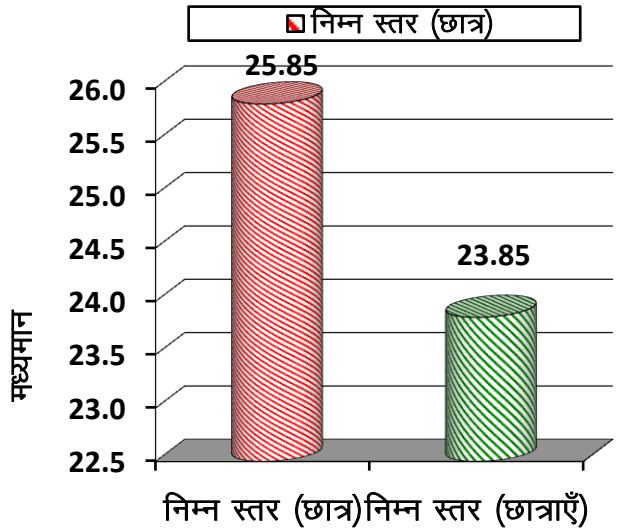

निष्कर्ष

रूप से कहा जा सकता है कि उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों में, उच्च तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाली छात्राओं के नैतिक मूल्यों में तथा निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जबकि उच्च और निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों के नैतिक मूल्यों में .05 स्तर पर तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्र–छात्राओं के नैतिक में सार्थक अन्तर है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एडवर्ड पिरिंगल (1999). डिजरटेशन एब्स्ट्रेक्ट इण्टरनेशनल, वॉल्यूम 69, 438

आलपोर्ट, जी0डब्ल्यू0 (1984). सम वैल्यू डिफरेन्स एमंग अडल्ट्स एण्ड चिल्ड्रन इन साउथ अफ्रीका,

जनरल ऑफ स्पेशल साइकोलॉजी वाल्यूम 63, 241–248

अग्रवाल, सरोज (1977). शिक्षण अभिक्षमता, सृजनात्मकता शैक्षिक उपलब्धि के सह–सम्बन्ध अध्ययन, एम0एड0 लघु शोध प्रतिवेदन, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

बंसल (1999). प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास में माता–पिता की शिक्षा का प्रभाव का अध्ययन, अप्रकाशित लघु शोध आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

चौबे, सरयू प्रसाद (1986) मनोविज्ञान और शिक्षाः लक्ष्मी नारायण बुक डिपो, आगरा, उ0 प्र0

धवन एवं क्रिस्टन (1995). डिजरटेशन एब्सट्रेकर इण्टरनेशनल, वॉल्यूम 57, 339

डंकवाल एवं किरनलता (2000). भारतीय शिक्षा, शोध पत्रिका, लखनऊ रिसर्च वर्ष–19 अंक 2

ज्ञानानी (2003). भारतीय शिक्षा, शोध पत्रिका लखनऊ रिसर्च वर्ष–22 अंक 2

गुप्ता, डॉ0 एस0पी0 और गुप्ता, डॉ0 अलका (2008) सांख्यिकीय विधियाँः शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उ0 प्र0

गुप्ता, अल्पना (2001). ए क्रास कल्चर प्रिसपेक्टिव ऑफ मोरल वैल्यूज एण्ड चिल्ड्रेन, इण्डियन जर्नल ऑफ साइकोमेट्री एवं एजूकेशन

कपिल, एच0के0 (1981) रिसर्च मैथड इन विहेवियर साइन्सः विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, उ0 प्र0

लाल, रमन बिहारी (2001) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्तः रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, उ0 प्र0

नेगी, मुहम्मद (1996). डिजरटेशन एब्सट्रेक्ट इण्टरनेशनल, वॉल्यूम 61, 428

पाठक, पी0डी0 (1982) शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धान्तः विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, उ0 प्र0

रूहेला, सत्यपाल (2009) मूल्य शिक्षाः क्या, क्यों, कैसे?: अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, उ0 प्र0

श्रीवास्तव, डी0एन0 (1993) अनुसंधान विधियाँः साहित्य प्रकाशन, तृतीय संशोधित संस्करण, आगरा, उ0 प्र0